रात्रिभोजन - अन्य दर्शनमें निषेध

श्री जिनशासन जितनी सूक्ष्मता अन्य दर्शनमें न भी हो, परंतु वह भी रात्रिभोजन में असंख्य जीवो की हिंसा को स्विकार करते है और रात्रिभोजन को वह महापाप कहते है। तद्व्यतिरिक्त वे रात्रिभोजन को नरक का नेशनल हाइवे नम्बर एक गिनते है। और कहते है कि- रात्रिभोजन करनेवालों के जप-तप-तीर्थयात्रादि रुप सत्कार्य (पुण्य) निष्फल होते है।

वर्तमानमें शायद धर्मगुरु उनको शास्त्र की सत्य बातों से अवगत न भी कराते हो या उनको अंधेरे में भी रखते हो; पर उससे रात्रिभोजन में लगनेवाला पाप लगना बंध तो नही हो जाता और उससे रात्रिभोजन सेव्य भी नही बनता।

आस्तिक दर्शनो में और योग दर्शन में भी रात्रिभोजन को पाप माना है और उसे अभक्ष बताया है। और उसके त्याग की ही प्रेरना दी है। उन्होने रात्रिभोजन त्याग का फल एक माह में पंद्रह उपवास (बीना फराल का) का पुण्य बताया है और एक बार के रात्रिभोजन के पाप की शुद्धि सहस्त्र चांद्रायण तप से भी नही हो पाती ऐसा भी बताया है।

रात्रिभोजन त्याग के बारेमें ग्रंथाधार:

चत्वारो नरकद्वारा, प्रथमं रात्रिभोजनम् ।
परस्त्रीगमनं चैव, सन्धानानन्तकायिके ।। पद्मपुराण-प्रभासखंड.

नरक के चार दरवाजे है:- १.रात्रिभोजन २.परस्त्रीगमन ३.आचार और ४.अनंतकाय (कंदमूल) भक्षण।

अर्थात् जो इन चार पापों से निवृत्त नहि होते उनकी नरक में जानेकी संभावनाए अत्यंत अधिक है। उनको नरक में अनंत दु:ख भोगने पडते है।

नरक का जघन्य (कमसे कम = MINIMUM) आयु १०,००० वर्ष है और उत्कृष्ट (ज्यादासे ज्यादा = MAXIMUM) आयु ३३ सागरोपम (असंख्यात काल) का है। नरक में हर समय (काल का सबसे छोटा अंश) अनंत दु:ख है, जिसका वर्णन करना भी असंभव है।

मद्यमांसाशनं रात्रौ - भोजनं कंदभक्षणम् ।
ये कुर्वन्ति वृथास्तेषां, तीर्थयात्रा जपस्तप: ।। महाभारत (ऋषीश्वरभारत)

जो लोग मदिरापान करते है-शराब पीते है, मांसाहार-मांस, मछली, अन्डे, वगेरेह का भक्षण करते है, रात्रिभोजन करते है और कंदमूल-अनंतकाय का भक्षण करते है उनकी तिर्थयात्रा, जप-तपादि अनुष्ठान निष्फल होते है।

अर्थात् रामायण की तरह महाभारत में भी मदिरापान, मांसाहार, रात्रिभोजन और कंदमूल त्याग का ही उपदेश दिया है।

अस्तंगते दिवानाथे, आपो रूधिरमुच्यते ।
अन्नं मांससमं प्रोक्तं, मार्कण्डेयमहर्षिणा ।। मार्कण्डेयपुराण

मार्कण्डेयऋषि कहते है कि सूर्यास्त के बाद पानी पीना वह खुन पीने जैसा है और अन्न खाना वह मांस खाने जैसा है।

मृते स्वजनमात्रेऽपि, सूतंक जायते किल ।
अस्तंगते दिवानाथे, भोजनं किमु क्रियते ? ।।

स्वजन की मृत्यु से सूतक लगता है, तो फिर सूर्यास्त के बाद भोजन कैसे कर शकते है?

अर्थात् स्वजन की मृत्यु होने के बाद जब तक प्रेत घरमें होता है तब तक कोई भोजन नही करते, तब फिर सूर्यदेव के अस्त हो जाने के बाद भोजन कैसे कर शकते है? अर्थात् रात्रिभोजन कैसे कर शकते है?

मद्यमांसाशनं रात्रौ-भोजनं कंदभक्षणम् ।
भक्षणात् नरकं याति, वर्जनात् स्वर्गमांप्नुयात् ।।

मदिरा-शराब, मांस, रात्रिभोजन और कंदमूल का भक्षण जो करते है वे नरक में जाते है और जो उनका त्याग करें वह स्वर्ग में जाते है।

ये रात्रौ सर्वदाऽऽहारं, वर्जयन्ति सुमेधसः ।
तेषां पक्षोपवासस्य, फलं मासेन जायते ।।

जो पुण्यात्माए रात को सर्व आहार का त्याग करते है उन्हे एक माह में एकपक्ष (१५ दिन) का उपवास का फल प्राप्त होता है।

अर्थात् रामायण, महाभारत की तरह मार्कण्डेयपुराण में भी मदिरा-शराब, मांस, रात्रिभोजन और कंदमूल का त्याग का ही उपदेश दिया है और त्याग का फल एक माह में एकपक्ष (१५ दिन) के उपवास के बराबर कहा है और उससे स्वर्गप्राप्ति भी बताई है।

नोदकमपि पातव्यं रात्रावत्र युधिष्ठिर ।
तपस्विना विशेषेण, गृहिणा च विवेकिना ।। मार्कंड पुराण अ.३0श्लोक २२.

हे युधिष्ठिर ! तपस्विओ को तो खास और विवेकी गृहस्थो को भी रात को पानी भी नही पीना चाहीए।

अर्थात् रात्रिभोजन के त्यागोपरांत सर्व जनो को और खास करके तपस्विओं को, रात को (सूर्यास्त के बाद) पानी का भी त्याग करना आवश्यक है।

त्वया सवमिदं व्याहतं, ध्येयोडसि जगतां रवे !
त्वयि चास्तमिते देव ! आपो रुधिरमुच्यते !! कपोलस्त्रोत्र श्लो.२४-स्कन्द पुराण

हे सूर्यदेव ! आपसे सर्व जगत व्याप्त है, और आप जगत को ध्यान करने योग्य हो। इसलिये हे देव ! आपके अस्त होने के बाद पानी भी खुन के जैसा गीना जाता है।

अर्थात् रात्रिभोजन के त्यागोपरांत सर्व जनो को पाप से बचने के लिये सूर्यास्त के बाद पानी का भी त्याग करना आवश्यक है।

नक्तं न भोजयेद्यस्तु, चातुर्मास्ये विशेषत: ।
सर्वकामानवाप्नोति, इहलोके परत्र च ।।योगवाशिष्ठ पूर्वार्ध श्लो.१०८

जो लोग रात्रिभोजन नहि करते और चातुर्मास में तो खास रात्रिभोजन का त्याग करते है, उनके इसभव और परभव के सर्व मनोरथ सिद्ध होते है।

एकभक्तशनान्नित्यमग्निहौत्रफलं लभेत् !
अनस्तभोजनो नित्यं, तीर्थयात्रफलं भवेत् !! स्कंन्दपुराण स्कन्द ७ अ.११ श्लो.२३५.

जो लोग नित्य एक ही बार भोजन करते है उनको अग्निहोत्र के फल का लाभ होता है। और जो लोग नित्य सूर्यास्त के पूर्व ही भोजन करते है उन्हे तीर्थयात्रा का फल प्राप्त होता है।

चातुर्मास्ये तु सम्प्राप्ते, रात्रीभोज्यं करोति य: ।
तस्य शुध्दिनं विद्येत, चान्द्रायणशतैरपि ।। ऋषीश्वरभारत-वैदिकदर्शन.

चातुर्मास में भी जो लोग रात्रिभोजन करते है, उनके पाप की शुध्दि सहस्त्र चांद्रायण तप से भी नही हो पाती।

अर्थात् सर्व शास्त्रो में मदिरा-शराब, मांस, रात्रिभोजन और कंदमूल के त्याग का ही उपदेश दिया है। और उसका फल सर्व मनोकामना सिध्दि और घर बेठे तीर्थयात्रा वगेरेह बताया है।

मदिरा-शराब, मांस भक्षण, रात्रिभोजन और कंदमूल भक्षण में अनेक जीवों की हिंसा होती है और वह हिंसा का फल उपर बताये अनुसार नरक के दु:ख ही है, इसीलिये उनका त्याग कराया है। और अब अहिंसा का फल बताते है।

यो दद्यात् काञ्चनं मेरुं, कृत्स्नां चैव वसुंधराम् ।
एकस्य जीवितं दद्यात्, न च तुल्यं युधिष्ठिर ! ।। महाभारत

हे युधिष्ठिर ! अगर एक मनुष्य सोने के मेरु का दान देता है और दूसरा एक प्राणी को जिवनदान (अभयदान) देता है, उन दोनो की तुलना नहि हो शकती (क्योंकि जिवनदान अधिक श्रेष्ठ है) ।

न भू प्रदान न सुवर्ण दान न गो प्रदानं न तथान्न दानं।
यथा वदान्तीह महा प्रदानं सर्वेषु दानेषु अभय प्रदानम् ।।

सुवर्ण, पृथ्वी, गाय और अन्नदान से भी अभयदान को महादान कहनेमें आया है।

दीर्घमायु: परं रुपमारोग्यं श्लाघनीयता ।
अहिंसाया: फलं सर्व, किमन्यत् कामदैव सा ।। योगशास्त्र प्र.२.

दीर्घ आयु, श्रेष्ठ रुप, अरोग्य, प्राशंसनीयपना, यह सब अहिंसा के फल जानो, अधिक क्या कहुं? अहिंसा कामधेनु जैसी है।

अर्थात् मदिरा-शराब, मांस भक्षण, रात्रिभोजन और कंदमूल भक्षण के त्याग से जो अहिंसा का पालन होता है, उसको जगत का सर्व श्रेष्ठ दान बताया है और उसका फल कामधेनु समान अर्थात् सर्व मनोकामना सिद्धि रुप बताया है।

मज्झिमनिकाय के कीटागिरिसूत्र में बताया है कि- एक समय बडे भारी भिक्षु संघ के साथ भगवान बुद्ध काशी में चारीका करते थे। वहां भगवान ने भिक्षुओं को आमंत्रित किया और कहा “भिक्षुओं ! में रात्रिभोजन से विरत हो भोजन करता हुं। रात्रिभोजन छोडकर भोजन करने से आरोग्य, उत्साह, बल, सुखपूर्वक विहार का अनुभव करता हुं। आओ, भिक्षुओं ! तुम भी रात्रिभोजन विरत हो भोजन करो, रात्रिभोजन छोडकर भोजन करने से तुम भी उसका अनुभव करो।“

अर्थात् भगवान बुद्ध ने भी रात्रिभोजन त्याग का ही उपदेश दिया है।

संकलनकार: CA. जयेश मोहनलाल शेठ.

संकलनकार के पुस्तक WWW.JAYESHSHETH.COM पर उपलब्ध है।